International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कृषि का परिवर्तित स्वरूप : बांसवाड़ा जिले के विशेष सन्दर्भ में
Changed Nature of Agriculture: Special Reference to Banswara District

पूनमचन्द खांट शोधार्थी (भूगोल विभाग)
Poonam Chand khant (Research Scholar)
डॉ. लक्ष्मणलाल परमार, सहआचार्य प्रभारी अधिकारी परीक्षा
गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय बाँसवाड़ा (राज.)

शोध सारांश –

कृषि का विकास मानव विकास के साथ–साथ उस देश की प्रगति को द्योतक होता है। कृषि एक प्राथमिक व्यवसाय है, जिसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग कर मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति कर सर्वांगीण विकास करना हैं। इस व्यवसाय में खाद्यान्न फसलों, फलों, सब्जियों, फूलों एवं पशुपालन को सम्मिलित किया जाता है। कृषि विश्व का प्रमुख व्यवसाय है जो वैश्विक जनसंख्या को खाद्यान्न आपूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

बाँसवाड़ा जिले में प्राचीन काल से आदिम जीवन निर्वाहन कृषि (मिश्रित कृषि) जनजातियों के द्वारा की जाती थी। स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा का स्तर बढ़ने और लोगो में कृषि के प्रति जन जागरूकता बढ़ने से स्थानीय जिले के कृषक समुदाय द्वारा आदिम एवं निर्वहन कृषि पद्धति छोड़कर व्यापारिक कृषि, फुलो की कृषि करने लगे है। इस जिले में हरित क्रांति एवं सिंचाई परियोजना से कृषि के प्रारूप में अत्यधिक परिवर्तन हो रहा है। जिलें में कृषि क्रियाओं में तकनीकी प्रयोग एवं वैज्ञानिक विधियों से जैविक कृषि को बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है। फिर भी छोटे किसानों को रूढ़िवादिता छोड़कर उन्नति की राह पर अग्रसर होना चाहिए।

मूल शब्द :– कृषि, संसाधन, प्राथमिक व्यवसाय, जलवायु, तकनीकी जैविक कृषि

कृषि का प्राचीन स्वरूप पुरातात्विक खोजो से सिद्ध होता है कि आरम्भ में कृषि व्यवसाय पाषाण एवं ताम्र उपकरणों पर निर्भर थी। इसके पश्चात् लोंह उपकरण एवं विभिन्न सभ्यताएं विकसित हुई थी। इन्हीं सभ्यताओं में बोलन नदी के किनारे मेहरगढ़ नामक स्थान से लगभग 5000 ई. पूर्व कृषि जन्म गेहूँ एवं जौ के साक्ष्य प्राप्त हुए है। मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ जनसंख्या के बढ़ने एवं खाद्य सामग्री की कमी होने से पशुपालन को भी बढ़ावा दिया था। इसके पश्चात् उन्नत बीजों के माध्यम से कृषि कर उत्पादन में वृद्धि कर मानव अपनी आवश्यकता की पूर्ति करने लगा।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भौगोलिक दशाओं, उत्पाद की माँग, श्रम ओंर प्रौद्योगिकी के आधार पर कृषि दो मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत की जाती है।

निर्वाह कृषि –

इस प्रकार की कृषि कृषक परिवार आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए की जाती है। इस कृषि में कम उपज, निम्न स्तरीय प्रौद्योगिकी एवं पारिवारिक श्रम का उपयोग किया जाता है।

आदिम निर्वाह कृषि – इस कृषि में छोटे जोत पर साधारण ओजारो ओर अधिक श्रम से कृषि की जाती है। इस कृषि में एक से अधिक फसले उगाई जाती है। उदाहरण – चावल, मक्का आदि।

स्थानान्तरित कृषि – इस प्रकार की कृषि वृक्षों को काटकर ओर जलाकर भूखंड को साफ किया जाता है। तब राख में मृदा में मिलाया जाता है, भूमि की उर्वरता की समाप्ति के बाद वह भूमि छोड़ दी जाती है, नये भूखण्ड पर कृषि की जाती है। इसे ' कर्तन एवं दहन'' भी कहते है।

चलवासी पशुचारण – यह कृषि शुष्क एवं अर्द्धशुल्क भागों में प्रचलित है। इसमें पशुचारक अपने पशुओं के साथ चारे ओर पानी के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर निश्चित मार्गो में घुमतें है।

वाणिज्यिक कृषि – इस कृषि में फसल उत्पादन ओर पशुपालन बाजार में विक्रय हेतु किया जाता है। इस प्रकार की कृषि में अधिक पूंजी एवं मशीनों का उपयोग होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में द्वितीय विश्व युद्ध एवं विभाजन के फलस्वरूप बिखरी हुई अर्थव्यवस्था सामने थी। उस समय देश में शरणार्थियों की संख्या में बढ़ोतरी, मुद्रास्फिति एवं खाद्य समस्या मौजुद थी। इन्हीं प्राथमिकता को पूरा करने के लिये प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951–56) की शुरूआत हेरड–डोमर मॉडल आधारित की गई। जिसमें कृषि एवं सिंचाई को सर्वोच्च प्राथमिकता थी। इस खाद्य संकट को दूर करने के लिए 1966 में हरित क्रान्ति की शुरूआत करने से भारतीय कृषि परम्परा में आमूलचूल परिवर्तन देखने को मिला। उन्नत कृषि को बढ़ावा देने हेतु भारत सरकार ने कृषि विश्वविद्यालय, कृषि अनुसंधान केन्द्र एवं कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना की है। कृषकों के शोध एवं प्रशिक्षण के लिये बांसवाड़ा जिलें में भी कृषि अनुसंधान शोध संस्थान बोरवट

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

में कार्यरत है। योजना आयोग एवं भारतीय कृषि मंत्रालय के अनुसार भारत को 15 कृषि जलवायु खण्डों में विभक्त किया गया है। इसके अनुसार राजस्थान का दक्षिणी भू–भाग आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र में सम्मिलित है, यह राजस्थान का सबसे छोटा जलवायु खण्ड है।

कृषि में अधिक उत्पादन के लिये फसलों के प्रबन्धन के साथ एवं सिंचाई प्रबन्धन करना भी अतिआवश्यक है। भारतीय कृषि मानसुन पर आधारित है। परन्तु वर्षा जल के अलावा तालाब, कुओं, नदी, नालों के जल का उपयोग में सिंचाई के रूप में किया जाात है। इसके अन्तर्गत सिंचाई परियोजनाओं को भी महत्व दिया गया है बांसवाड़ा जिलें में माही बजाज सागर परियोजना कृषि के लिये वरदान साबित हुआ है। बांसवाड़ा का जलस्तर निम्न मानचित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

बढ़ती आबादी जलवायु परिवर्तन एवं भू–जल में गिरावट के कारण सिंचाई में पारम्परिक तरीकों के स्थान पर अधिक प्रभावी सिंचाई तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। नवीनतम तकनीकों से सिंचाई जल का उचित प्रबन्धन किया जा सकता है। वर्तमान में प्रचलित प्रमुख सिंचाई प्रद्धतियाँ निम्न है –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1. बुँद–बुँद सिंचाई पद्धति – यह जल प्रबन्धन की महत्वपूर्ण विधि है, इसका विकास का श्रेय इजराइली इंजीनियर सिमका ब्लास्क (1940) में पाईप के रिसाव वाले स्थान पर पौधो में वृद्धि देखी इसके तत्पश्चात् 1964 में इसका विकास किया। यह विधि गन्ना, कपास, टमाटर, मक्का अमरूद, नारियल, नींबु, अंगुर आदि फसलों एवं फलों के लिये उपर्युक्त है। इस पद्धति में 30 से 40 प्रतिशत सिंचाई जल की बचत की जा सकती है।
2. बोछारी सिंचाई पद्धति – इस सिंचाई पद्धति में पानी बारिश की बुंदो की तरह फसल पर गिरता है। जमीन सममतल न होने से फसलों को समान पानी दिया जाता है।

   इसके अलावा गेहूं उत्पादन में फर्ब विधि से सिंचाई करने एवं धान में श्री विधि का प्रयोग कर जलप्रबन्धन किया जा सकता है।
3. स्प्रिकलर सिंचाई प्रणाली :– यह सिंचाई प्रणाली ड्रिप सिंचाई की तरह होती है, इसमें ड्रिप सिंचाई में पौधे की जड़ क्षेत्र में पानी बुंद–बुंद गिरता है, लेकिन स्प्रिकलर सिंचाई में पानी महीन बुंदो में बदलकर वर्षा की फुहार की तरह पौधो के ऊपर गिरता हैं। इसमें स्प्रिकलर को फसलों के अनुसार उचित दूरी पर लगाने के बाद पम्प चलाया जाता है।

निष्कर्ष – जनजातीय बहुल जिला बांसवाड़ा में शिक्षा का स्तर बढ़ने से, कृषि के प्रति जनजागरूकता, सरकारी योजनाएँ अनुसंधान केन्द्र के सामुहिक प्रयासों से कृषि के परम्परागत स्वरूप में बदलाव आया है। यहां के कृषक प्राचीन कृषि पद्धति को छोड़कर नवीन तकनीक के रूप में बदलाव कर रहे है। स्थानीय जिलें में परिवर्तन स्वरूप ग्रीन हाउस, पाली हाउस सौर ऊर्जा पम्पसेट, बुंद–बुंद सिंचाई का अधिक प्रयोग हो रहा है। परम्परागत कृषि के स्थान पर बागवानी ओर संब्जियों की ओर अधिक रूझान बढ़ा है। इस प्रगति में कृषि अनुंसधान केन्द्र बोरवट का अहम योगदान है जो कृषि के उन्नत बीजों को कृषकों उपलब्ध करवाकर उन्नति की राह की ओर अग्रसर करता है। कृषि के साथ–साथ नवाचार एवं तकनीक के प्रयोग से शिक्षित कृषक एवं युवा पशुपालन युक्त कृषि में अपना भविष्य संवार रहे है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. पुष्पेन्द्र कुमार एवं सुनील कुमार वर्मा '' किसान खेती'' वर्ष–1, अंक 4 (अक्टुबर – दिसम्बर 2014)
2. कृषि चेतना अंक –2, वर्ष – 2019
   भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान लुधियाना पृ. 22
3. राष्ट्रीय सुक्ष्य सिंचाई मिशन – एक परिचय कृषि विभाग बिहार पृ. – 14 एवं , 19

4. संसाधन एवं विकास भाग – 2 राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल जयपुर पृ. – 40, 41

5. जिला एटलस – बांसवाड़ा – 2013 पृ. 10